

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namani.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

ाश्रीगणशायनमःश्रीरक्षिणामृतिशुरुभ्योनमः॥अनेनाख्यंशुरुनोभिकविलयनिमाकरं।शास्त्र वर्द्धानल परंस्कुंकीर्निकरं परंगणाअनाद्यां रिवृलाद्यायाम्। यिनेगनमायिने।।आरुश्य या २ सद्द्याय रिक्षणाचारमं ३ ने।।३।।इत्रवकुवाममनानुसारिभिहिरण्यपात्रमचाः पूर्णदेशाती यादि॥विवाहेतुकमास्या खंशोभयुक्तामहेश्वरः॥नशूलामासनेकुपीन्नचथ्यानं विव द्वा निगानसांक्रीचपीत्वावप्रजयेमरेमेश्वरीमित्यादि॥वर्टमूलेश्वनीन्नान्त्रदेवं।प्र प्रजाह्मा। घत्वामालोकरेजपेसरेमेश्वरीमित्यादि॥वर्टमूलेश्वनीन्नान्त्रदेवं।प्र

Acc. No. 1826M-1716
Title - ERIUIT-ER AMPOSA.
Author - Anistralist.
Date - ?
Subject - Zefa.

Tollio - 4

Xerox - 8.



चारणार्यादेश्वतिनंत्रवचनात्यवंत्रद्धहराणिमानानार्यहिष्चमकाः णेरवीष्व जनिक्रयतेगत् १ दर्गत्वभिवेतिव्रमः गहिरण्यपात्रेमधोः पूर्णहरातीया श्रेष्ठातिका वद्यान् प्रयास्त्रप्रतेष्ठात्वात् श्रेषु इतिका ग्रिष्ठात्विक्षाः प्राप्ताः स्पर्णं भिवान्य ते गिन्नोत् स्याद्यामागमारुग्ने पृण्णिक्षित्रहारहस्येगवाम् स्वकात्रेष्ठात्रे भावात्र्यमे पा विस्यात् गस्याञ्चलादे मोक्षासा दिग्नद्शपंगित्रद्धारहस्येगवाम् स्वकात्रेष्ठित्र स्यादि तेत्रवचनातिक्ष्रह्वराणीतिवान्यं गत्रयाच्छी मह्लेक्षराचार्यक्षेत्रं त्रभावेग गत्रेञ्चित्र वेगवामके गञ्जवोमकं गिन्नुकं चगिन्नुकं के त्रभागिच्यात्रेष्ठित्र स्वर्णीयः ग स्वचनान्मश्रेत्वेत्रकात्वस्याञ्चेगञ्चनश्चरह्मिणाचारस्वत्र स्वर्णीयः ॥ केवलगुद्धमार्गत्रदश्चित्र स्वर्णायात्र स्वर्णीयः॥ केवलगुद्धमार्गत्रदश्चित्र स्वर्णायात्र स्वर्णीयः॥ हादिवामायारं नकारयेत्।।वामाग्रमामद्दे के विस्वविद्यद्दपरः प्रिये।।बाक्षणेमिश्तवा निव्यक्तिविष्यक्तिविष

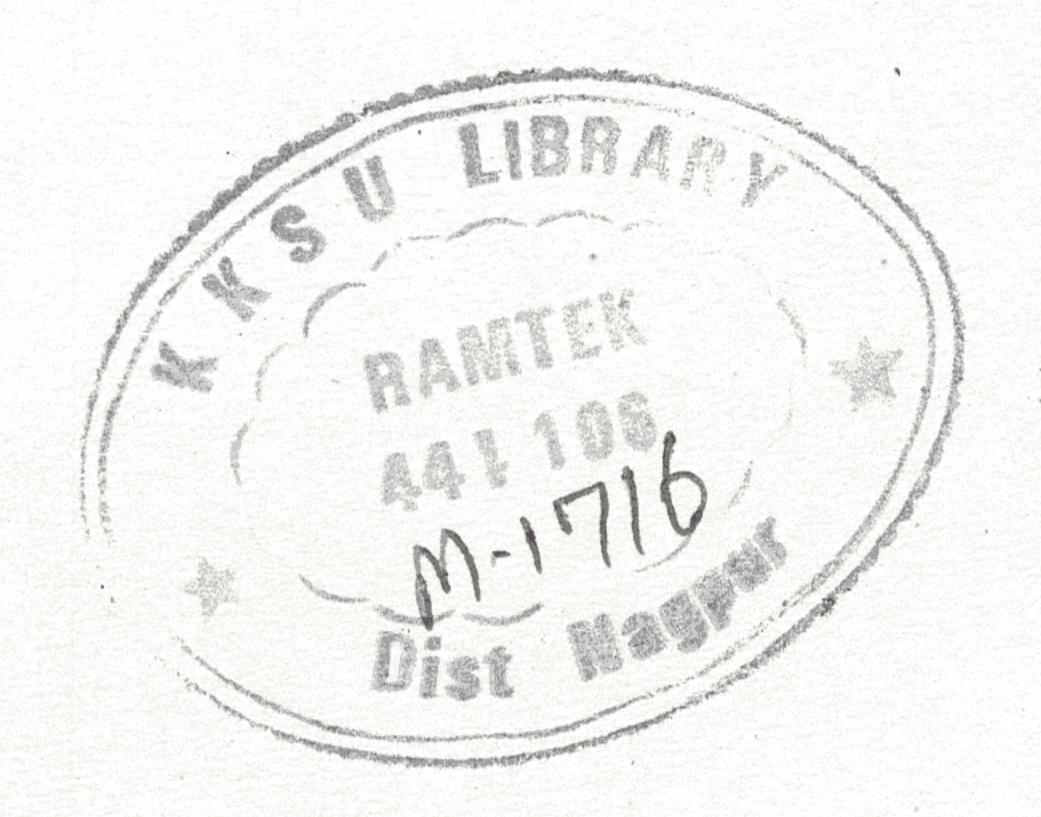
तिमायां वन्प्रूलनेगरा जापचारे पुष्णा दोस्तरा ध्यानं विशिष्णेन गानामसोपास नेप्रोक्त गाने विलिश्व निर्माय विश्व के स्वाप्त मार्गिय के स्वाप्त के स्वा

4

णेत्रोक्तं ह घीचात्र महेश्वरी गननः रात्र गुणंड ग्यंत्र तः रात्र गुणं चतं गण्यतं गणं ते लेलेला छत्र गणं में प्रशासनः रात्र गणामं वित्र न तो हर्रा गणं में प्रशासनः रात्र गणामं वित्र न तो हर्षा हिता है से हती के मादिता गणि हिता गणि हिता गण्य है के लिंदि गाद स्वर एत स्वार गण्य है के लिंदि गाद स्वर एत स्वार गण्य है के लिंदि शास श्वर है के लिंदि गणे के कि लिंदि है से प्रशासन है के मिल्स है के लिंदि है से प्रशासन है के मिल्स है के लिंदि है से प्रशासन है के मिल्स है के लिंदि है से प्रशासन है से से मिल्स है के लिंदि है से प्रशासन है से से मिल्स है के लिंदि है से प्रशासन है से सिल्स है के मिल्स है से सिल्स है से सिल्स है है से सिल्स है है से सिल्स है सिल्स है सिल्स है से सिल्स है सिल्स ह

स्थान तुःस्कारिका ऋचे ये माणी निसादिवा साणिन तथा कार्यवा साण्येन हिन राति। भागि साणा मिरा ह द्वाबा साणी देव ही ये ने । बासणा स्व नुकल्ये न देव विश्व विश्व के लेव न देव विश्व के लेव न देव विश्व के सामा सामा सामा सिका कि स्व के सामा सिका कि स्व के सामा के सिका कि स्व के सिका कि सिका कि

7



,CREATED=05.10.20 11:34 TRANSFERRED=2020/10/05 at 11:35:35 ,PAGES=8 ,TYPE=STD ,NAME=S0003837 ,Book Name=M-1716-DAKSHINACHAR MATMANDAN ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=0000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF

[OrderDescription]